डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID : principalcmjcollege@gmail.com Web: www.cmjcollege.com Mob. No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों के लिए ऑनलाइन कोर्स मैटेरियल (दिनांक–15 अप्रैल, 2020)

संत–काव्य परंपरा के प्रमुख संत कवियों का परिचय

हिन्दी शक्ति आंदोलन में निर्गुण काव्य परंपरा की दो षाखाएं हैं– एक संत काव्य परंपरा और दूसरी सूफी काव्य परंपरा। संत काव्य परंपरा के प्रतिनिधि कवि कबीर हैं। इस षाखा के सभी कवि पहले संत हैं, फिर कवि। संत काव्य का सामान्य अर्थ है संतों के द्वारा रचा गया काव्य। किन्तु जब हम हिन्दी में संत काव्य की बात करते हैं तो उसका सीधा अर्थ होता है निर्गुणोंपासक ज्ञानमार्गी कवियों द्वारा रचित संकलित काव्य। प्रमुख संत कवि हैं– कबीर, नामदेव, रैदास, गुरुनानक, धर्मदास, रज्जब, मलूकदास, दादूदयाल, सुन्दरदास, चरणदास, सहजोबाई आदि। इनमें सुंदरदास को छोड़कर सभी संत कवि कामगार तबके से आते हैं। जैसे कबीर जुलाहा का, नामदेव दर्जी का, रैदास चमार यानी चमरे का, दादूदयाल बुनकर का, सेना नाई का और सदना कसाई का काम करते थे।

1.कबीरदास :– संत कवियों में सर्वाधिक चर्चित और क्रांतिकारी कवि कबीर हैं। उन्होंने पहली बार प्रचलित हिन्दु धर्म या ब्राह्मण धर्म के सगुण साकार ब्रह्म की मूर्ति पूजा, ब्राह्मणों द्वारा निर्धारित वाह्याचारों, आडंबरों का आक्रामक रूप में विरोध किया और समाज के सभी तबकों के बीच धार्मिक भावनाओं से आक्रांत गलत सोच के प्रति जागरूक कर इंसानियत भाव या मनुष्यता का बीजारोपण किया। यह उस युग के लिए एक साहसपूर्ण क्रांतिकारी कदम था। कबीर के समय में ब्राह्मण धर्म या उसके सगुण साकार ब्रह्म की उपासना में फैले वाह्याचार और वाह्याडंबर से निम्न वर्ग की जनता त्रस्त थी। इसी तरह इस्लाम धर्म या उसके मुल्ला, काजियों के तुगलकी फरमानों ने निम्न वर्ग के मुसलमानों का जीना मुहाल कर दिया था। इसी से कबीर ने हिन्दु–मुस्लिम दोनों को एक साथ लताड़ा, फटकारा और कहा–

'पाहन पूजै हरि मिलै तो मैं पुजूं पहाड़।'

और

'काँकर–पाथर जोड़िके मस्जिद लिया बनाय।
ता चढ़ मुल्ला बाग दे, क्या बहरा भयो खुदाय।।'

कबीर की इस नयी सोच ने 'ब्राह्मणवाद' या 'हिन्दुत्ववाद' और इस्लाम के कठमुल्लेपन को एक नयी चुनौती दी। उनकी चुनौती के समक्ष वे षांत–खामोष होकर किंकर्तव्यविमूढ़ की अवस्था में आ गये थे। कबीर की चुनौती को स्वीकार करने का साहस उनमें नहीं था। जनता के समक्ष कबीर के उपदेषों ने एक बड़े परिवर्तन को जन्म देकर प्रेरित किया। फलस्वरूप उन्होंने धर्मविहीन, जाति विहीन, संप्रदाय विहीन, वर्ग विहीन और वर्ण विहीन समाज की परिकल्पना कर

एक नये समाज के निर्माण के लिए आह्वान किया। उन्होंने जलती मषाल लेकर डंके की चोट पर लोगों को ललकारते हुए उद्घोषणा की–

'कबीरा खड़ा बजार में लिए लुकाठी हाथ,
जो घर जाड़ै आपनो चलो हमारे संग।।'

नैतिक, आध्यात्मिक और मानव व्यापारों से जुड़े कबीर के उपदेषों ने निर्गुण ब्रह्म की उपासना पर बल दिया। जीवन से जुड़े अनेक कार्य व्यापारों में उन्होंने ईष्वर की प्राप्ति या अन्य रहस्योद्घाटन के लिए ईष्वर से अधिक गुरु को महत्त्व दिया। उस युग में जन सामान्य और निम्न वर्ग के लिए 'गुरु' आसानी से सर्व सुलभ थे वहीं उनके लिए ईष्वर का दर्षन दुर्लभ था। मंदिर में प्रवेष वर्जित था। ठाकुर के कुंए से पानी पीना वर्जित था। धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन और श्रवण वर्जित था। ऐसी परिस्थिति में कबीर सामान्य जनों के लिए वरदान बनकर उपस्थित हुए। उनका निर्गुण निराकार ब्रह्म और संत–वाणियां सबके लिए अनुभूत और सुलभ था। संत प्रवचन में सबके लिए द्वार खुला था। ज्ञान, प्रेम और भक्ति के माध्यम से उन्होंने जन जागरण का संदेष दिया। उनकी आक्रामक भाषा उस युग की आक्रामकता को कम करने के लिए अनिवार्य था। वैसे भी संत की भाषा बगैर किसी लाग लपेट के दो–टूक होती है। वे 'वाणी के डिक्टेटर' थे, जो चाहते, अपनी भाषा से कहलवा लेते थे। भाषा उनके समक्ष कमजोर थी।

कबीर अनपढ़ थे। उनका लोकानुभव अत्यंत सूक्ष्म, व्यापक एवं गहन था। उन्होंने धर्म–षास्त्रों का अध्ययन नहीं किया था। बावजूद इसके उन्होंने ज्ञानानुभव से पंडितों तथा मौलवियों के षास्त्रीय ज्ञान को चुनौती देते रहे। उन्होंने स्पष्ट षब्दों में कहा –

'मैं कहता आँखिन देखी,
तू कहता कागद की लेखी।

उनका मानना था आँखों से देखी गयी चीजों पर भरोसा करो कागज या षास्त्रों में लिखी गयी बातों पर नहीं। क्योंकि उसकी रचना करने वाला पंडित और मौलवी झूठा है और तोता रटंत बकता है। उनमें मौलिकता कुछ भी नहीं है–

'पंडित वाद वदन्ते झूठा'

कबीर प्रेम और मानवता के पुजारी थे। प्रेम रस में पगकर वे कहते हैं – भींजै चुनरिया प्रेम रस बुँदन'। और 'जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं हम नाहिं। प्रेम गली अति साँकरि, ता में दो न समाहिं।' उन्होंने स्पष्ट षब्दों में कहा 'षास्त्रीय ज्ञान से कोई पंडित नहीं होता बल्कि प्रेम के 'ढ़ाई आखर' के मर्म को समझने से प्रेम की व्यापकता समझ में आती है। असली पंडित वही है, जो प्रेम के धर्म और मर्म को समझता है।

इस प्रकार जड़ और चेतन सबमें ईष्वर की अनुभूति करने वाले कबीर ने साधना के द्वारा ब्रह्म का साक्षात्कार किया। संसार के आकर्षण को 'धोखा' और माया को 'महाठगिनी' कहा। 'गुरू' और 'नाम रूप' को महत्त्व दिया। उनकी वाणियों में मानवतावादी विचार, इंसानियत भाव, प्रेम और सौंदय के प्रति संवेदनषीलता और अन्याय, कर्मकांड, वाह्याचार और वाह्याडंबर के विद्रोही भाव कूट–कूट कर भरे हैं। उनकी संपूर्ण रचना 'बीजक' में संग्रहीत है। बीजक के तीन भाग हैं–**1. सबद** : 'सबद' या 'षब्द' गेय पद हैं। इनमें प्रेम और विरह के भाव व्यक्त हैं। **2. साखी** : 'साखी' संस्कृत के 'साक्ष्य' षब्द का तद्भव रूप है। साखी में कबीर ने अपने साक्षात अनुभवों को सप्रमाण प्रस्तुत किया है। **3. रमैनी** : यह चौपाई एवं दोहे का मिश्रित रूप है।

2.रैदास :– निर्गुणोपासक संतों में रैदास (रविदास) का नाम विषेष रूप से उल्लेखनीय है। रैदास जाति के चमार थे और काषी के रहने वाले माने जाते हैं। उन्होंने निर्गुणोपासना का 'रैदासी पंथ' भी चलाया। रैदासी पंथ के लोग महाराष्ट्र, गुजरात और पष्चिमी उत्तरप्रदेष तक फैले मिलते हैं। उन्होंने कोई षास्त्रीय षिक्षा हासिल नहीं की थी, किन्तु उनकी साधना और भक्ति के कारण भक्तों में उनका स्थान बहुत ऊँचा था। उनकी तन्मय भक्ति भावना को प्रकट करने वाला एक चर्चित पद है–

अब कैसे छूटे राम रट लागी।
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग अंग बास समानी।
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभु जी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहि मिलत सुहागा।

3.नामदेव :– महाराष्ट्र के नामदेव कबीर से पूर्व के कवि हैं, इसलिए उन्हें संत साहित्य का प्रवर्तक कहा जा सकता है। इनकी रचना अलग से प्रकाषित नहीं है। 60 से अधिक भजन 'गुरुग्रंथ साहब' में संकलित है। आरंभ में वे सगुण भक्ति परंपरा से जुड़कर रचना कर रहे थे। बाद चलकर गोरखनाथ की षिष्य परंपरा के संत ज्ञानदेव की प्रेरणा पा कर नाथपंथ के प्रभाव में आये और निर्गुणोपासना करने लगे। इन्होंने अपनी वाणी से निर्गुण ब्रह्म के स्वरूप निरूपण, कर्मकांड के खंडन की प्रक्रिया में हिन्दु–मुस्लिम दोनों की आलोचना की और ज्ञानी संतों की श्रेष्ठता सिद्ध की।

4.गुरुनानक :– संत काव्य–परंपरा में गुरुनानक का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनके सिद्धांतों और उपदेषों को लेकर सिक्ख धर्म का प्रवर्तन हुआ। उनका जन्म लाहौर के पास तलवंडी, षेखपुरा जिले के नानकाना साहब में एक व्यावसायी परिवार में 15 अप्रैल, 1969 ई0 को हुआ था, जो अब पाकिस्तान में है। उनके पिता का नाम कालूचन्द खत्री और माता का नाम तृप्ता देवी था। उन्हें पंजाबी, हिन्दी, संस्कृत, फारसी का ज्ञान था। 1539 ई0 को इन्होंने 'वाहे गुरु' कहकर अपने षरीर का परित्याग किया था। उनकी रचनाओं का संग्रह पाँचवें गुरु अर्जुन देव ने सन् 1604 ई0 में किया था, जो ''गुरु ग्रंथ साहिब'' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उनके कुछ पद ''जपुजी'' नाम से संग्रहीत हैं, जिनका सिक्ख लोग प्रातःकाल में पाठ करते हैं।

गुरुनानक पंजाब में कबीर की निर्गुणोपासना का प्रचार–प्रसार किया और बाद चलकर सिक्ख संप्रदाय के आदिगुरु हुए। नानक में कबीर जैसी उग्रता और अक्खड़ता नहीं है और न ही रैदास की तरह विनम्रता एवं निरीहता। जाति–पाति, छुआछुत तथा पाखंड एवं वाह्याचारों के खिलाफ उक्तियां उनकी कविता में मिलती है। उनकी रचनाओं की भाषा पंजाबी मिश्रित ब्रजभाषा है।

5.धर्मदास :– धर्मदास कबीर के मुख्य षिष्य थे और कबीर की रचनाओं के प्रथम संग्रहकार माने जाते हैं। इन्होंने कबीर का जीवन चरित भी लिखा है। वे बांधवगढ़ के निवासी थे। अपने ही नाम–षीर्षक 'धर्मदास' से इनका पद संग्रह मिलता है।

6.बावरी साहिबा :– भक्तियुग में बावरी साहिबा का समय 1542 ई0 से 1605 ई0 है। ये दादू की समकालीन थीं और इन्होंने 'बावरी सम्प्रदाय' का प्रवर्त्तन किया। वे मायानन्द की षिष्या थीं। इनकी रचनाओं का संग्रह 'षब्दसागर' ग्रंथ में मिलता है।

7.मलूकदास :– मलूकदास का जन्म सन् 1574 ई0 में इलाहाबाद (प्रयाग) में हुआ था। उनके पिता का नाम सुन्दरलाल खत्री था। इन्होंने 'मलूकदासी संप्रदाय' चलाया, जो मस्त संतों का संप्रदाय है। इनके प्रमुख ग्रंथों के नाम हैं– 'ज्ञानबोध रतनखान', 'भक्त बच्छावली', 'भक्त विरुदावली', 'पुरुष विलास', 'अलखवाणी' और 'रामवतार लीला' आदि। अटूट आध्यात्मिक आस्था, विष्वास से युक्त दोहा लोक में आज भी प्रचलित है –

अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम।
दास मलूका यों कहे, सबके दाता राम।।

उनके इस दोहे को लेकर आधुनिक युग में किसी कवि ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है–

दास मलूका कह गये, क्या सबके दाता राम लिखा है ?
या गरीबों की खातिर, भूखों मरना अंजाम लिखा है ?

8.दादूदयाल :– इनका जन्म 1544 ई0 में गुजरात की वर्तमान राजधानी अहमदाबाद में हुआ था। जनश्रुति के आधार पर इन्हें मुसलमान धुनिया का पुत्र माना जाता है और इनका मूल नाम दाऊद बतलाया जाता है। कुछ लोग यह भी मानते हैं कि वे किसी ब्राह्मण को साबरमती नदी में बहते हुए मिले थे। 1586 ई0 में इन्हें अकबर ने अपने दरबार में बुलाया और कुछ दिनों तक इनके साथ सत्संग भी किया। यहीं उनकी भेंट रहीम खानखाना से हुई। वे घुमन्तु संत थे। राजस्थान के देवसा नामक स्थान इन्होंने सुन्दरदास नामक वैष्य को अपना षिष्य बनाया, जो बाद चलकर संत परंपरा में काफी चर्चित हुए। उनके दूसरे चर्चित षिष्य रज्जब हैं। दादूदयाल की वाणी मूलतः कबीर की विचारधारा की व्याख्या है।

9.सुन्दरदास :– संत संप्रदाय में सुन्दरदास उच्च कोटि के विद्वान और कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए। वे दादूदयाल के षिष्यों में सर्वोच्च थे। संतों में वे सर्वाधिक षिक्षित, ज्ञानी पंडित और षास्त्राभ्यासी भी थे। संत परंपरा में वे अकेले ऐसे संत हैं, जिन्होंने षास्त्रीय ढ़ंग से एवं काव्य रीति का पालन करते हुए काव्य रचनाएं कीं। इनकी भाषा अलंकृत, पांडित्यपूर्ण, परिष्कृत, परिमार्जित एवं प्रांजल है। इनकी सर्वाधिक चर्चित रचना 'सुन्दर विलास' है।

10.रज्जब साहब :– रज्जब साहब का जन्म जयपुर के साँगनेर में एक प्रतिष्ठित पठान परिवार में हुआ था। ये सुषिक्षित थे और 'अंगबन्धु' नाम से उनकी वाणी का संकलन मिलता है। इनकी रचनाओं में 'बानी' व 'सर्वांगी' प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त संत परंपरा में चरणदास, प्राणनाथ, सहजोबाई आदि भी महत्त्वपूर्ण हैं।

इस प्रकार संतों ने लोक जीवन को अपने स्वच्छ एवं आध्यात्मपरक चिंतन से समाज में एक नयी सोच और एक नयी दिषा देकर पहली बार हिन्दी में आलोचना का मार्ग प्रषस्त किया। आचरण की षुद्धता, वचन और कार्य की सत्यता, आत्मालोचन, निष्ठा, अन्य के लिए आत्म त्याग और लौकिक तथा अलौकिक षक्ति पर विष्वास आदि गुणों का प्रचार–प्रसार कर नये समाज की संरचना में अपना अविस्मरणीय योगदान दिया।

दिनांक : 15/04/2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**